वनस्पतियों के जनक डॉ. जगदीश चन्द्र बसु

वंश सैनी,
रुड़की।

डॉ. जगदीश चन्द्र बसु का जन्म ढाका में हुआ था। कस्बा है विक्रमपुर और गाँव रीढ़खाल। तारीख थी 30 नवम्बर, सन् 1858 ई.। पहले ढाका भारत का ही अंग था उनके पिता का नाम था श्री भगवान चन्द्र बसु। उनकी आरम्भिक शिक्षा गाँव के ही एक स्कूल में हुई थी। सैण्ट जेवियर कॉलेज, कलकत्ता से उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। लंदन स्थित कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से उन्होंने बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहां उन्हें कई वैज्ञानिकों से मिलने का अवसर मिला। अपना अध्ययन समाप्त कर वह सन् 1885 ई. में भारत लौटे। स्वदेश में वह कलकत्ता स्थित प्रेजीडेंसी कॉलेज में अध्यापक के रूप में आए। उनका विषय था भौतिक विज्ञान। सन् 1887 ई. में उनका विवाह हुआ। उनकी पत्नी थी अबला। उन्होंने अपने पति का साथ दिया। प्रेजीडेंसी कॉलेज में जगदीश का पढ़ाने के साथ–साथ अनुसंधान कार्य भी चलता रहा। सन् 1896 ई. में उन्हें लन्दन विश्वविद्यालय से डी. एस.सी. (डॉक्टर ऑफ साइंस) की उपाधि मिली। आगे चलकर जगदीश ने ध्वनि विषय पर कई खोजें की। सन् 1895 ई. में उन्होंने कलकत्ता के टाउन हाल में एक करिश्मा कर दिखाया। उन्होंने बेतार के तार का एक अजूबा प्रदर्शन किया था। उन्होंने पेड़–पौधों पर भी कई प्रयोग किये। उनसे यह पता चला कि पेड़ पौधों में भी महसूस करने की क्षमता होती है। उन्होंने कई यन्त्र भी तैयार किये। उनका पहला यन्त्र है अनुलेखन यन्त्र (1911)। एक अन्य है मैग्नेटिक केस्कोग्राफ। उनकी प्रतिभा को देखकर विदेशों के वैज्ञानिक वाह–वाह कर उठे। 23 नवम्बर, सन् 1937 ई. को हृदय गति रूक जाने के कारण हमारे उस महान् वैज्ञानिक की मृत्यु हो गयी थी।

देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

–सुभाषचन्द्र बोस